5

कोरोना महामारी के बाद इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों का अधिगम ह्रास एवं समाधान

भानु प्रताप सिंह*
रोहित गोस्वामी**

कोविड-19 महामारी के दौरान जहाँ विश्व की अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य एवं शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई थी, वहीं भारत के युवाओं को जो महामारी में शिक्षा से वंचित हो रहे थे, उनके लिए इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स वरदान साबित हुए थे। वहीं कोविड-19 से पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के छात्रों के जो माता-पिता उन्हें मोबाइल, टेलीविज़न एवं लैपटॉप आदि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूर रहने की सलाह देते थे तथा इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के अत्यधिक प्रयोग करने पर दंड भी देते थे। साथ ही इनके द्वारा बच्चों के मस्तिष्क एवं शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों एवं परिणामों पर बच्चों को उनके अभिभावकों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता था। कोविड-19 महामारी में उन्हीं माता-पिता द्वारा उन्हें इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स प्रदान कराए गए जिससे छात्र अपने शिक्षकों एवं विद्यालय से जुड़ सकें तथा इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिले थे, जैसे— कोविड-19 के दौरान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स तथा उपकरणों द्वारा शिक्षा में व्यस्त होने के कारण छात्रों के तनाव में कमी आई थीं। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रयोग कुछ हद तक उच्च शिक्षा में तो प्रभावकारी प्रतीत होता है, लेकिन यह प्राथमिक शिक्षा पर पूर्णतः लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स बच्चों की कम उम्र में अधिक दुष्प्रभाव डालते हैं। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स सीमित रूप में मिश्रित प्रणाली शिक्षा या ब्लेंडेड शिक्षा (जिसमें विद्यार्थी पाठ्यक्रम का एक भाग कक्षा में पूरा करता हैं और दूसरा भाग डिजिटल एवं ऑनलाइन अभिभावको की निगरानी में करता हैं) के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान जहाँ विश्व की अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य एवं शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई, वहीं भारत के स्कूल की व्यवस्था इन्हीं इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के सहारे चलती रही। बच्चे जो महामारी के कारण शिक्षा से वंचित हो रहे थे, उनके लिए इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स वरदान साबित हुए।

*क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, चंडीगढ़
**सहायक, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, चंडीगढ़

© NCERT not to be republished

जहाँ देश कोरोना के कारण लॉकडाउन में बंद पड़ा था, सभी शिक्षण संस्थान बंद पड़े थे। न छात्रों की पढ़ाई हो रही थी, अध्यापक अपने को इस नए हालात से निबटने में खुद को सक्षम नहीं पा रहे थे, शिक्षण संस्थान उहापोह के दौर से गुजर रहे थे। इन हालातों में जो इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के प्रयोग के विशेषज्ञ थे, अपने अध्यापकों को उचित ऑनलाइन प्रशिक्षण देकर अपने व्यापक इन्फ्रास्ट्रक्चर— ज्ञानवाणी, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग, ज्ञानदर्शन आदि के अलावा वेब कॉन्फ्रेंसिंग को भी जोड़ते हुए विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी।

लॉकडाउन के दौरान ही 21 सितंबर, 2020 को भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हुई, जो इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के माध्यम से ही जनता तक पहुँची। शिक्षा नीति वास्तविक धरातल के बहुत करीब है तथा व्यक्ति को वातावरण एवं समाज से सीखने को प्रेरित करती है। कोविड-19 महामारी के दौरान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, जैसे— मोबाइल, लैपटॉप आदि द्वारा विद्यार्थी अपने शिक्षकों एवं विद्यालय से जुड़ सके थे तथा इसके निम्न सकारात्मक परिणाम देखने को मिले—

- विद्यार्थियों की शिक्षा बिना किसी व्यवधान के पूर्ण हो रही थी।
- कोविड-19 के दौरान बीमारी के कारण हुए तनाव में कमी देखी जा रही थी जब बच्चे अपने आप को शिक्षा में व्यस्त कर रहे थे तब ऑनलाइन सीखने एवं सिखाने को बढ़ावा मिला।
- ऑनलाइन शिक्षा के नए आयामों का सृजन हुआ, शिक्षा के लिए नए-नए एवं सस्ते इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स तथा उपकरणों का निर्माण एवं प्रयोग हुआ।
- ऑनलाइन वेबिनारों एवं कार्यशालाओं का प्रयोग शुरू हुआ जिससे इनके आयोजनों में होने वाले खर्चों में कमी आई थी।
- विद्यार्थियों ने गैजेट्स की सहायता से (जिसमें व्हाट्सएप, यूट्यूब एवं अन्य मीडिया शामिल हैं) अपनी शिक्षा पूरी की।

साथ ही इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाने के संबंध में विभिन्न दैनिक समाचार-पत्रों में छपे शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के साक्षात्कार, लेखों, मतों तथा व्हाट्सएप ग्रुप पर दिए गए अपने विचारों के माध्यम से निम्न परिणाम प्राप्त हो रहे थे—

- अधिकांश शिक्षकों के पास महामारी के दौरान बच्चों को पढ़ाने हेतु लैपटॉप, डिजिटल बोर्ड आदि उपलब्ध नहीं थे। विद्यार्थियों को विद्यार्थियों से जुड़ने तथा ऑनलाइन पढ़ाने हेतु उन्हें मोबाइल, इंटरनेट, लैपटॉप, डिजिटल बोर्ड आदि की व्यवस्था जुटाने हेतु काफ़ी मेहनत एवं परेशानी का सामना करना पड़ा था।
- शिक्षकों ने यह भी माना कि ऑनलाइन शिक्षण हेतु उन्हें भी सीखने की ज़रूरत पड़ी महामारी के दौरान तथा मित्रों एवं कर्मियों के सहयोग से यह संभव हो सका। इससे शिक्षकों को भी कुछ नया सीखने का मौका मिला।
- विद्यार्थियों को पढ़ाना शिक्षकों का सर्वोपरि कर्म एवं धर्म है। इसे शिक्षकों ने न केवल स्वीकार किया, बल्कि महामारी के दौरान बढ़-चढ़कर

© NCERT not to be republished

सीखने-सिखाने के डिजिटल मोड में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी।

महामारी के दौरान विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों ने यह महसूस किया है कि अगर यह इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स नहीं होते तो इसके दूरगामी परिणाम सुखद एवं दुखद दोनों हो सकते थे, जैसे—

- विद्यार्थी खाली समय में महामारी के दौरान एकांत में रहे थे, घर से बाहर नहीं निकले, ऐसे में वे तनावग्रस्त एवं अवसाद के शिकार हो सकते थे।
- महामारी के दौरान सीखने एवं सिखाने का क्रम टूट सकता था जिससे विद्यार्थी 1 या 2 शैक्षणिक वर्ष पीछे होने के कारण उनका आत्मविश्वास भी टूट सकता था।
- आवश्यकता आविष्कार की जननी है यह सत्य है, इसी क्रम में यह मान सकते हैं कि महामारी के दौरान सीखने एवं सिखाने हेतु ऑनलाइन विधाएँ आदि का सृजन एवं प्रयोग नहीं हो पाता।

अधिकांश अभिभावकों ने माना कि विद्यार्थी अपने माता-पिता, दादा-दादी एवं नाना-नानी से दूर होते जा रहे थे लेकिन कोविड-19 के दौरान उन्हें उनके पास रहकर न केवल सीखने का मौका मिला, अपितु अभिभावक भी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स एवं उपकरणों के साथ शिक्षा के ऑनलाइन अवसरों से रूबरू हो सके। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की मदद से परस्पर मित्रों, सहपाठियों एवं रिश्तेदारों से विद्यार्थियों का संवाद बढ़ा था और एक-दूसरे की मदद करने की मनोवृत्ति को बढ़ावा मिला था।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में शिक्षा और पाठ्यक्रम हेतु महत्वपूर्ण सुझाव

दुनियाभर में शिक्षा प्रणालियों में बदलाव एक मूल्यवान सबक प्रदान करता है और शिक्षा, पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को पुन: व्यवस्थित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 आज देश की शिक्षा प्रणाली की बढ़ती असमानता को दूर करने का प्रयास करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन महत्वपूर्ण सुझाव हैं—

डिजिटल डिवाइस को मज़बूत करना। प्रौद्योगिकी में सार्वभौमिक गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त करने और सीखने के परिणामों में सुधार करने की आवश्यकता है। डिजिटल क्षमताओं, आवश्यक बुनियादी ढाँचे और कनैक्टिविटी को दूरस्थ और सबसे गरीब समुदायों तक पहुँचना चाहिए। सूचना युग में प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच एक तत्काल आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम को पुनः प्रस्तुत करना। आज जबकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद करने के डिजिटल तरीकों को सीखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, स्पष्ट है कि संकट हमें सिखा रहा है कि विद्यार्थियों की वास्तविकताओं, महत्वपूर्ण रचनात्मक और लचीली सोच, लचीलापन तथा विद्यार्थियों में सहानुभूति को बढ़ावा देने में पाठ्यक्रम को आधार बनाया जाना चाहिए। हमारे पर्यावरण के साथ एक सहजीवी संबंध विकसित करना चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विकास शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।

© NCERT not to be republished

शिक्षकों के व्यापक कैडर को सशक्त बनाना। यह संकट शिक्षकों को अपनी भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए मजबूर कर रहा है, ताकि सूचना को स्थानांतरित करने से लेकर सीखने में सक्षम बनाया जा सके। दूरस्थ शिक्षा में बदलाव ने अलग-अलग सिखाने के कई अवसर दिए हैं, जैसे— आत्म-शिक्षा को प्रोत्साहित किया, विविध संसाधनों से सीखने के अवसर प्रदान हुए, और उच्च-तकनीक तथा निम्न-तकनीकी स्त्रोतों के माध्यम से विविध आवश्यकताओं के लिए अनुकूलित सीखने की अनुमति मिली आदि।

शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक विकेंद्रीकृत, लोकतांत्रिक समुदाय-आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति हो, जो बच्चों के परिवारों के साथ विद्यार्थियों के जीवन के साथ सहानुभूति रखे। कोविड-19 में दूरस्थ शिक्षा के साथ उनकी संबंधित चुनौतियों ने हमें यह भी सिखाया कि हमें सीखने को स्वतंत्र करना चाहिए और सूचना हस्तांतरण के साथ-साथ अनुभव-आधारित शिक्षा पर भी बल देना चाहिए।

विद्यार्थी जीवन में इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रभाव

वर्तमान में प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन रही है तथा इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स निश्चित रूप से हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गैजेट्स को तेज गति से विकसित करने वाली प्रौद्योगिकी में काफ़ी वृद्धि हुई है। छोटी उम्र से लेकर बुढ़ापे तक, हर किसी को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करते देखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण टी.वी., स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट आदि रहे हैं। प्रौद्योगिकी ने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की मदद से अध्ययन के विभिन्न तरीकों से मानव जीवन को बदल दिया है तथा सीखना आसान बन गया है। वर्तमान में हम देखते हैं कि विद्यार्थी नोटबुक के बजाय टैबलेट का उपयोग कर रहे हैं। यह निश्चित रूप से एक महान बदलाव है, लेकिन विद्यार्थी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से इतने आकर्षित होते हैं कि वे भूल जाते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, यह एक दयनीय स्थिति है। यद्यपि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स ने आकर्षक वीडियो, चित्रमय व्याख्या द्वारा और अधिक सीखने की अवधारणाओं को आसान बना दिया है, लेकिन उन्होंने बच्चों के जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। यदि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग एक सीमा में किया जाता है तो इसका मानव जाति पर कम प्रभाव पड़ता है। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के फ़ायदे हैं, क्योंकि उसने हमारे जीवन को आसान बना दिया है, लेकिन साथ ही उनके नुकसान भी हैं। विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के कुछ प्रमुख प्रभाव इस प्रकार हैं—

- आमतौर पर टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप, जैसे— इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स में विभिन्न प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रम और बहुत सारी हिंसक सामग्री दिखाई जाती है। यहाँ तक कि बच्चे अवांछित चीज़ों, सर्फिंग और बहुत कुछ में स्वयं को शामिल कर लेते हैं। ये बच्चे के जीवन पर भारी प्रभाव डालते हैं। सोशल मीडिया और

© NCERT not to be republished

गैजेट्स पर बातचीत करने वाले बच्चे अपनी आक्रामकता में अचानक वृद्धि पाते हैं।

- विद्यार्थियों को मोबाइल और लैपटॉप की इतनी बुरी लत होती है कि वे पूरी रात गेम खेलने, सर्फिंग, चैटिंग आदि में बिताते हैं, यह खतरनाक हो सकता है। पूरे दिन सक्रिय रहने के लिए बच्चों को पर्याप्त नींद की आवश्यकता होती है, लेकिन वर्तमान पीढ़ी के बच्चे फोन और लैपटॉप पर अधिक निर्भर हैं। इसके अलावा इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की स्क्रीन द्वारा उत्सर्जित किरणें दृष्टि को नुकसान की ओर ले जाती हैं। इससे रेटिना में समस्या हो सकती है और अस्थायी दृष्टि-हानि हो सकती है। माता-पिता द्वारा बच्चों को बुद्धिमानी से गैजेट्स का उपयोग करने के बारे में शिक्षित किए जाने की आवश्यकता है।
- आजकल छोटे बच्चे आउटडोर गेम खेलने में दिलचस्पी नहीं दिखाते, क्योंकि वे मोबाइल और टैबलेट पर व्यस्त रहते हैं। इसके साथ-साथ, बच्चे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रयोग करते समय सचेत हुए बिना, बहुत अधिक जंक फूड खाते हैं, इससे मोटापा हो सकता है।
- बच्चे और किशोर अधिक मात्रा वाले इयरफोन और हैडफोन पहने हुए मोबाइल और टैबलेट का उपयोग करते हैं। इससे उनके कानों को नुकसान होगा और वे बहरे हो सकते हैं। इयरफोन पहनना प्रतिबंधित नहीं है, लेकिन कम मात्रा और कम समय बनाए रखने की आवश्यकता है। बच्चे पूरे दिन अपने ईयरफोन के साथ फोन का इस्तेमाल करते हैं जो श्रवण हेतु खतरनाक है।
- सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रकाश किरणों का उत्सर्जन करते हैं जो हानिकारक हैं। लंबे समय तक लगातार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को देखने से लोगों के नेत्रों को नुकसान होता है। आँखों में मौजूद तरल सूख सकता है और दृष्टि की समस्या पैदा कर सकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से निकलने वाला रेडिएशन कैंसर पैदा करने वाला एजेंट है जिससे कैंसर की समस्या हो सकती है। बच्चे विभिन्न प्रकार के कैंसर, जैसे— ल्यूकेमिया, त्वचा, थायरॉयड, स्तन और पेट के कैंसर से व्यापक रूप से प्रभावित हो सकते हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग करने के कारण स्वास्थ्य-संबंधी प्रमुख समस्याओं में से एक पीठ दर्द है। बच्चे इस बात से अनज़ान हैं, लेकिन यह उन्हें धीरे-धीरे प्रभावित करता है। बच्चे लंबे समय तक लगातार इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पीठ दर्द होता है। इसलिए इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग करने वाले बच्चों के लिए एक प्रारंभिक चेतावनी हो सकती है कि गैजेट्स का उपयोग एक सीमा में करें। विद्यार्थियों के जीवन में अत्यधिक गैजेट्स के कई नकारात्मक प्रभाव हैं। यदि हम अपने छोटे बच्चों को अत्यधिक उपयोग से रोक नहीं सकते हैं तो इससे गंभीर मानसिक और स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। गैजेट्स का उपयोग करने के लिए विद्यार्थी कुछ समय खुद को आराम दें और फिर दूसरे काम पर वापस जाएँ। गैजेट्स का ज़्यादा इस्तेमाल न करें और उनका बुद्धिमानी से उपयोग करें।

© NCERT not to be republished

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण, शिक्षकों के लिए चुनौती

जब देश पहली बार लॉकडाउन में चला तो हर संभव तरीके से शिक्षक अपने विद्यार्थियों से जुड़े। यह शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, हालाँकि शिक्षक मोबाइल फोन के माध्यम से अपने विद्यार्थियों से जुड़े। शिक्षकों ने कोविड-19 महामारी संकट के बारे में सटीक जानकारी फैलाकर, मिथकों को दूर करने, सावधानी बरतने और घबराहट से न डरने की तरफ विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित किया। जिन विद्यार्थियों के परिवार ने आजीविका खो दी थी, उनके पास कोई बचत नहीं थी और भोजन की आवश्यकता थी। शिक्षकों ने सरकारी राहत उपायों, हेल्पलाइनों और व्यक्तिगत रूप से उन परिवारों को राशन और पका हुआ भोजन उपलब्ध कराने में मदद की। एक बार जब इन बुनियादी ज़रूरतों पर ध्यान दिया गया, तो शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए जो भी डिजिटल साधन उपलब्ध थे, उनका उपयोग किया। कम-तकनीकी विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए, शिक्षकों ने आवाज़-संदेश, पाठ-संदेश और फोनकॉल का उपयोग किया। उच्च-तकनीकी विद्यार्थियों (यानी स्मार्टफोन के साथ) के लिए, शिक्षकों ने लंबे वीडियो भेजे और चर्चा के लिए व्हाट्सएप समूहों का उपयोग किया।

कोरोना महामारी में अधिगम हेतु चुनौतियाँ

इंटरनेट के लिए छत पर जाने को मजबूर विद्यार्थी— केरल की 20 साल की विद्यार्थी फोन और इंटरनेट की खराब कनेक्टिविटी से परेशान थी। उनके मुताबिक, "घर के आस-पास और पड़ोस में कई जगहों पर इंटरनेट इस्तेमाल करने की कोशिश की, लेकिन कहीं भी अच्छा सिग्नल नहीं मिला। जब भी फोन आता था, बात करने के लिए छत पर भागना पड़ता था।" गाँव में हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड की सुविधा नहीं है। उन्होंने अलग-अलग सर्विस-प्रोवाइडर के मोबाइल कनेक्शन लिए, लेकिन किसी में भी स्पीड नहीं मिली। लॉकडाउन में पहले से ज़्यादा लोग फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं, इसलिए सर्विस बदतर हुई है।

भारत में गाँव-गाँव तक ऑनलाइन शिक्षा में बाधाएँ— कोरोना महामारी के बाद हुए लॉकडाउन ने स्कूलों और कॉलेजों को भी ठप्प कर दिया, बच्चों की शिक्षा का एकमात्र रास्ता ऑनलाइन क्लास हो गया। लेकिन भारत के ग्रामीण इलाकों में ऑनलाइन पढ़ाई कितनी संभव है? लॉकडाउन के ऐलान के साथ ही जैसे देश में सारे काम अचानक रुक गए थे, वैसे ही देश के लगभग 32 करोड़ विद्यार्थियों के स्कूल-कॉलेज जाने पर भी रोक लग गई थी। सरकार ने ऐलान किया था कि स्कूल-कॉलेज उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा का इंतजाम करें। लॉकडाउन की शुरुआत में बड़े शहरों के स्कूलों को ही ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने में खासा वक्त लग गया। ये वो स्कूल थे, जिनके पास फंड की कमी नहीं थी। फिर भी बोर्ड एग्जाम समेत कई इम्तिहान रद्द हो गए। फिर सोचिए कि देश के गाँवों का क्या हाल होगा? क्या गाँव तक ऑनलाइन शिक्षा बिना किसी रुकावट के पहुँच सकती है? कोरोना लॉकडाउन में लगी बंदिशें तो खुल गई थीं। लेकिन 20 लाख से ज़्यादा कोरोना के मामलों के बीच जीवन अभी भी रुका हुआ था। स्कूलों के खुलने

© NCERT not to be republished

पर रोक थी। चार महीने बाद भी स्थिति वैसी ही थी और समस्याएँ अनेक। सरकार ने सरकारी स्कूलों को ऑनलाइन लाने के लिए कई तरह की मदद पहुँचाने के वादे किए, लेकिन कई बुनियादी समस्याएँ अभी भी वहीं की वहीं थीं।

गाँव में इंटरनेट से लेकर चार्जिंग तक की चुनौतियाँ— सरकार ने जब ऑनलाइन पढ़ाई के बारे में सोचा होगा तो अधिकारियों के दिमाग में ज़ूम और स्काइप जैसे वीडियो-कॉलिंग एप रहे होंगे। जहाँ बड़े शहरों में ये मुमकिन भी हो गया है, लेकिन गाँवों में अभी तक कनेक्टिविटी की जो हालत है उसमें कॉल ही अपने आप में एक मुसीबत है, ऊपर से कई बच्चों के घरों में स्मार्टफोन नहीं। कुछ राज्य सरकारों की तरफ से ये भी दावा किया गया था कि सरकारी स्कूलों में बच्चों को फोन बाँटे जाएँगे, पर अब तक ये इंतज़ाम हो नहीं पाए। ऐसे में सिर पर इस मुसीबत के बीच टीचर विद्यार्थियों को पढ़ाने के नायाब तरीके निकाल रहे थे। कई शिक्षक अपना वीडियो रिकॉर्ड कर व्हाट्सएप पर भेजते थे, तो कुछ फोन पर ही बच्चों को पढ़ाने की कोशिश में थे, लेकिन इसमें भी मुश्किलें कम नहीं थीं। झारखंड के तोर्पा जिले में एक सरकारी स्कूल में पढ़ाने वाली शिक्षिका का कहना है कि—

- पूरे स्कूल में पढ़ने वाले 115 बच्चों में से अब तक कुल 20–25 बच्चे ही ऑनलाइन क्लास का हिस्सा बन पा रहे हैं, क्योंकि ज़्यादातर के पास या तो फोन नहीं या इंटरनेट की कनेक्टिविटी इतनी खराब है कि बच्चों का ऑनलाइन आ पाना ही मुश्किल है।
- कभी टीचर ऑनलाइन आ पाते हैं तो एक या दो बच्चे ही होते हैं, सिर्फ़ कुछ बच्चों को पढ़ाने का क्या फ़ायदा जब बाकी बच्चों को अलग से पढ़ाना ही पड़ेगा। स्कूल के मुताबिक मार्च के महीने से ही उन्हें ये समस्या झेलनी पड़ रही थी, क्योंकि वहाँ सभी बच्चों का एक साथ क्लास के लिए उपस्थित हो पाना भी काफ़ी मुश्किल था।
- एक और बड़ी समस्या यह थी कि फोन होने पर भी बहुत से माता-पिता बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई को अहमियत नहीं दे रहे थे। स्कूल न जाने की स्थिति में कई बच्चे घरेलू काम या खेती में हाथ बँटाने में लग गए।
- पहले माता-पिता को बच्चों की पढ़ाई के लिए मनाना मुश्किल था, फिर जब पढ़ाई घर से ही होनी हो तो मुसीबत और बढ़ जाती है।
- ग्रामीण इलाकों में सरकारी दावों के बावजूद अभी भी हर एक बच्चे के पास स्मार्टफोन नहीं पहुँचे हैं। ज़्यादातर लोग फीचर फोन इस्तेमाल करते हैं और जिन गिने-चुने घरों में स्मार्टफोन हैं भी, तो वहाँ या तो पिता के साथ फोन सारा दिन घर के बाहर रहता है या फिर बड़े भाई के हाथ में। बच्चों की क्लास के टाइम के हिसाब से फोन मिल ही नहीं पाता।
- बच्चों को फोन के न होने पर भी ऑनलाइन लाने के लिए स्कूल की तरफ से कई कोशिशें की गईं, उन्होंने एक फोन के ज़रिए आस-पास के कई बच्चों को एक साथ लाने या पड़ोसी तक से कुछ देर पढ़ाई के लिए फोन देने की अपील भी की, लेकिन उसका भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

© NCERT not to be republished

सिर्फ़ झारखंड ही नहीं, उत्तर प्रदेश में भी गाँवों में चल रही ऑनलाइन पढ़ाई का भी ऐसा ही हाल था। लखीमपुर खीरी जिले के जनबहादुर गाँव में एक स्कूल चलाने वाले शिक्षक कहते हैं कि—

- कुछ वक्त के लिए स्कूल में पढ़ाई बंद करवानी पड़ी, क्योंकि ऑनलाइन पढ़ाई में हिस्सा ले पा रहे बच्चों की संख्या वहाँ पढ़ने वाले बच्चों की संख्या की आधी से भी कम है।
- ये टीचरों के लिए भी मुसीबत है कि क्लास में अगर सिर्फ़ दो ही बच्चे ऑनलाइन आ पा रहे हैं, तो टीचर उनको अलग से पढ़ा के क्या करें? उनके स्कूल की एक महिला टीचर को अपने बच्चे को सिर्फ़ इसलिए रिश्तेदार के पास भेजना पड़ा, ताकि वो वहाँ फोन का इस्तेमाल कर ऑनलाइन पढ़ाई कर सके।
- छोटे शहरों में स्कूलों का मुख्य साधन बच्चों की फीस है, लेकिन कोरोना लॉकडाउन के दौरान स्कूलों को फीस भी नहीं मिल रही थी। स्कूल में कई महीनों से बच्चों के परिवारों द्वारा फीस नहीं जमा की गई, लेकिन उसका सबसे बड़ा कारण ये था कि वहाँ कई लोगों के रोज़गार ठप्प पड़ गए। कई मज़दूर जो बाहर से अपनी नौकरियाँ छोड़ कर आए थे उनके पास खाने के भी पैसे नहीं थे, फिर ऐसे में बच्चों की फीस कैसे जमा करते?

ऑनलाइन शिक्षण के साधन जुटाने हेतु जुगत—

सरकारी स्कूलों से दूर हुए बच्चे पढ़ाई के अलावा भी काफ़ी कुछ खो रहे हैं। पढ़ाई के साथ उनके स्कूल से मिलने वाला मिड-डे मील भी अब उनको खिलाने की जगह नाप के राशन की तरह भेजा जा रहा है। यही नहीं ऐसे कई परिवार हैं जिन्हें खाना खरीदने या फोन खरीदने के बीच चुनना पड़ गया। कुछ वक्त पहले हिमाचल प्रदेश से एक किसान के स्मार्टफोन खरीदने के लिए अपनी गाय बेचने की एक खबर आई थी जिसने सोशल मीडिया पर कई लोगों का ध्यान खींचा था। दरअसल पैसों की कमी की वजह से किसान को अपनी एकमात्र गाय बेचकर कर्ज़ चुकाने और बच्चों की पढ़ाई के लिए फोन खरीदने का कदम उठाना पड़ा, लेकिन कुलदीप अकेले ऐसे इंसान नहीं जिन्हें लॉकडाउन में ठप्प पड़े काम के बीच खाने और स्मार्टफोन में फोन को चुनना पड़ा हो। असम से भी एक खबर थी कि एक परिवार को बच्चे की ऑनलाइन शिक्षा के लिए अपने घर की गाय बेचनी पड़ी। यह इकलौती गाय ही उनके परिवार की आर्थिक आय का ज़रिया थी। ये वो मामले थे जो सामने आए, पर ऐसी न जाने कितनी ही कहानियाँ होंगी जो लॉकडाउन के बोझ तले दबा दी गईं।

ऑनलाइन कक्षाएँ एक अस्थाई इंतज़ाम से ज़्यादा कुछ नहीं—

देश के ज़्यादातर बड़े निजी स्कूलों ने ज़ूम कक्षाओं का सहारा लिया, लेकिन बच्चों के अभिभावकों का कहना है कि यह सब एक अस्थाई इंतज़ाम से ज़्यादा कुछ नहीं है। स्कूल जा रही दो बच्चियों के पिता ने बीबीसी को बताया, "मेरे बच्चे ज़ूम पर रेगुलर क्लास ले रहे हैं, लेकिन इस ऑनलाइन पढ़ाई-लिखाई का अनुभव बस ठीक ही है। हर बच्चे पर विशेष रूप से ध्यान देने की समस्या इसमें दिखाई दे रही है"। इस तरह की बात तकरीबन हर

© NCERT not to be republished

शख्स ने बताई है, चाहे वह शिक्षक हो, विद्यार्थी या पेरेंट्स इस महामारी ने कैंपस एक्सपीरियंस के पूरे आइडिया को ही बदल दिया है। शिक्षक बताते हैं, "पूरी संभावना है कि हमारे अगले सेमेस्टर के इम्तिहान ऑनलाइन हों। हमने विद्यार्थियों को कोर्स मैटेरियल ऑनलाइन दे दिया है। साइंस के विद्यार्थियों के लिए यह थोड़ा चुनौती भरा है, क्योंकि इनमें लैब में जाकर प्रयोग करने पड़ते हैं"। स्कूल और यूनिवर्सिटी ने यह भी विचार किया कि खुलने के बाद वे किस तरह से काम करेंगे।

स्कूलों की जगह नहीं ले सकती ऑनलाइन पढ़ाई— कुछ अन्य स्कूलों ने विद्यार्थियों के बिल्डिंग या कक्षा में प्रवेश के दौरान उनका तापमान लेना अनिवार्य बना दिया है, लेकिन भारत जैसे सामाजिक और आर्थिक विविधता वाले देश में अलग-अलग विद्यार्थियों को देखते हुए शिक्षा का भविष्य शायद कुछ अलग रहेगा। ऑनलाइन शिक्षा भले ही एक नया ट्रेंड बनकर उभर रही है, लेकिन हाशिए पर मौजूद बच्चों के लिए किस तरह से इसे मुमकिन बनाया जाएगा? सीखने के अलावा, स्कूल में दोस्त बनते हैं, बातचीत होती है और मिड-डे मील भी मिलता है। ये सब चीज़ें अब खत्म हो गई हैं।

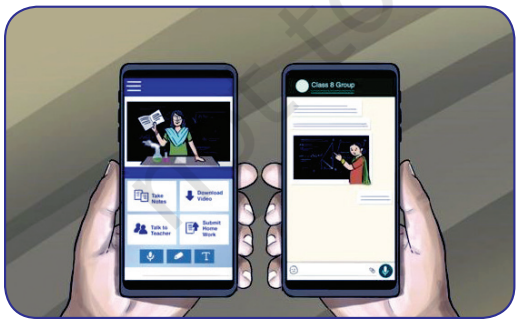

बड़े स्कूल कंप्यूटर पर कक्षाएँ ले रहे हैं, लेकिन बहुत से विद्यार्थियों के पास तो स्मार्टफोन तक नहीं है। बहुत से विद्यार्थी एक कमरे के घर में सारा दिन रहते-रहते परेशान हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि कोविड-19 के बाद की दुनिया में मोबाइल एप्लिकेशन-आधारित शिक्षण व्यवस्था भारत जैसे देश में कैसे बड़ी तादाद में बच्चों तक पहुँच सकती है जहाँ बहुत सारे लोगों के पास न तो स्मार्टफोन हैं और न ही इंटरनेट तक उनकी पहुँच है।

न केवल विद्यार्थी, बल्कि शिक्षकों के लिए भी है चुनौती—
शिक्षक नेटवर्क के ज़रिए डिजिटल खाई को पाटने की कोशिश कर रहे हैं। व्हाट्सएप के ज़रिए अधिकतम विद्यार्थियों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें वीडियो और ऑडियो ट्यूटोरियल भेज रहे हैं, लेकिन गरीब परिवारों से आने वाले अधिकतर बच्चों के माता-पिता काम पर चले जाते हैं और फोन अपने साथ ले जाते हैं। ऐसे बच्चे केवल शाम के वक्त ही फोन पर ऑनलाइन ट्यूटोरियल पढ़ पाते हैं। शिक्षक भी ऑडियो और वीडियो का इस्तेमाल करना सीख रहे हैं। यह काफ़ी थकाऊ है, लेकिन हमारे पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

कोविड-19 के बाद बच्चों की पढ़ाई कैसे हो

कोविड-19 ने उनके लिए स्थितियाँ पूरी तरह से बदल दी हैं। कोरोना वायरस फैलने के बाद डिजिटल साधनों तक पहुँच में बड़ी असमानता भारत में शिक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है, लेकिन अधिकांश द्वारा माना जाने लगा कि इलेक्ट्रॉनिक

© NCERT not to be republished

गैजेट्स के माध्यम से ही भारत की शिक्षा उन्हें उसी स्तर पर पहुँचाने की ओर अग्रसर है जिससे भारत एक बार स्वयं को विश्व गुरु के रूप में स्थापित कर सकता है। ऐसे में अब सरकारों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में एकीकृत करने का समय आ गया है, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विकास शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए और यह कि समानता और मूल लोकतांत्रिक मूल्यों का पाठ उतना ही दिया जाना चाहिए।

शैक्षिक नीतियों में आमूल-चूल बदलाव की ज़रूरत

कोरोना वायरस ने शिक्षाविदों को नए सिरे से सोचने और मौजूदा शैक्षिक नीतियों को फिर से तैयार करने के लिए मजबूर कर दिया है। विकसित देशों के मुकाबले भारत के हालात बिल्कुल जुदा है। भारत की अगर बात करें तो यहाँ कई स्कूलों और विश्वविद्यालयों ने ऑनलाइन शिक्षा को अपनाया है, लेकिन यहाँ शिक्षाविदों और विद्यार्थियों का इसे लेकर मिलाजुला अनुभव है। शिक्षाविद कहते हैं, "ऑनलाइन पढ़ाई की तरफ शिफ्ट होना ज़्यादातर तो आसान रहा था। लॉकडाउन छुट्टियों के दौरान हुआ और इसके तुरंत बाद हम ऑनलाइन पर शिफ्ट हो गए। सभी कक्षाएँ या तो गूगल मीट या जूम पर हो रही हैं, लेकिन इसके साथ ही कुछ विद्यार्थी ऐसे भी हैं जिन्हें इंटरनेट की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। ये विद्यार्थी अमूमन दूर-दराज़ के इलाकों के हैं।"

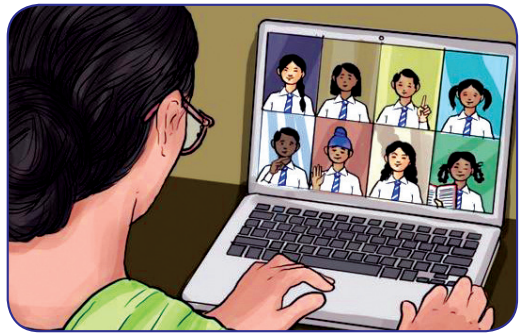

इनोवेशन की ज़रूरत

चुनिंदा शहरी स्कूलों के ऑनलाइन क्लासेज कराने और इनकी पहुँच सीमित होने के चलते शिक्षाविदों को हर तरह के आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के लिए पढ़ाई के इनोवेटिव तरीकों को ढूँढने की चुनौती पैदा हो गई है। भले ही यह ऑनलाइन शिक्षा का दौर है, लेकिन यह स्कूलों की जगह कभी नहीं ले पाएगी।

स्कूलों को खुद को प्रासंगिक बनाने के तरीके ढूँढने होंगे

कोविड-19 के बाद की दुनिया में स्कूलों को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए खुद को पूरी तरह से दोबारा खड़ा करना पड़ेगा। ऑनलाइन शिक्षा अब एक हकीकत है। ऐसे में स्कूलों को यह सोचना पड़ेगा कि वे किस तरह से बच्चे की जिंदगी में अपना योगदान दे सकते हैं। इस समय देश में इंटरनेट और स्मार्टफोन की सुविधा का विस्तार और लैपटॉप या टैबलेट हर विद्यार्थी को देने की व्यवस्था पर विचार करने की ज़रूरत है। शिक्षकों को भी डिजिटल शिक्षा के लिए तैयार करना होगा और उनकी ट्रेनिंग करानी होगी। डिजिटल एजुकेशन

© NCERT not to be republished

के लिए सिलेबस भी बदलना होगा और नए टीचिंग मटेरियल तैयार करने होंगे। सरकार की नई शिक्षा नीति में भी ऑनलाइन पढ़ाई पर ज़ोर है, तो माना जाना चाहिए जल्द ही हमें शिक्षा में ये बुनियादी बदलाव देखने को मिलेंगे।

निष्कर्ष

कोरोना महामारी के समय में विद्यालय प्रशासन एवं भारत सरकार के सयुंक्त प्रयासों से न केवल विद्यार्थी, महामारी के भयभीत वातावरण से दूर रह सकें, अपितु उन्हें विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के माध्यम से नया सीखने का अवसर मिले, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं की यह लाभ दूर-दराज़ के विद्यार्थियों को नहीं मिल पाया है। आज जबकि कोरोना काल समाप्ति की ओर है, विद्यालय प्रशासन, अभिवावक एवं भारत सरकार द्वारा संयुक्त प्रयास करने होंगे कि पूर्व की तरह नियमित शिक्षा प्रणाली को वापस ला सकें तथा ऑनलाइन पठन-पाठन को सहायक के रूप में प्रयोग में लाया जा सके।

संदर्भ

इंटरनेट की राह देख रहे इन बच्चों के लिए घर पहुँचा स्कूल— https://hindi.news18.com/news/career/no-internet-school-comes-home-in-rural-sikkim-3211982.html

कोरोना महामारी के दौर में इंटरनेट नहीं होना कितनी बड़ी मुसीबत? https://www.bbc.com/hindi/india-53196019

कोरोना वायरस का शिक्षा पर प्रभाव— https://www.researchgate.net/publication/358164473_korona_vayarasa_ka_siksa_para_prabhava

कोविड-19 के बाद आपके बच्चों की पढ़ाई कैसे हो पाएगी? https://www.bbc.com/hindi/india-53194793

न मोबाइल, न इंटरनेट— ऑनलाइन क्लास में कैसे पढ़ें बच्चे— https://www.bbc.com/hindi/india-53875570

बच्चों पर पड़ने वाले गैजेट्स के बुरे प्रभाव— https://www.bhaskar.com/news/LIF-LEI-9-harmful-effects-of-gadgets-on-children-4872529-PHO.html

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरा करने के लिए, पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाली चुनौतियों का समाधान किया जाना चाहिए। https://www.thehindubusinessline.com/opinion/columns/can-nep-make-india-a-knowledge-hub/article32346401.ece

साभार, 2020–2021. *अमर उजाला न्यूज़.* उत्तर प्रदेश.

© NCERT not to be republished